REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

''वर्तमान परिदृश्य में आतंकवाद और अहिंसा का विचार- एक अध्ययन''

डॉ. अन्जू राय

सारांशः

आज दुनिया निश्चित रूप से विनाश के कगार पर खड़ी है, जिससे उसकी रक्षा करना काफी कठिन दिखायी दे रहा है। इसका कारण है- आतंकवाद और परमाणु अस्त्रों की संख्या में अंधाधुंध वृद्धि का बराबर बना हुआ खतरा जिससे अकल्पनीय विनाश की नौबत आ सकती है। २१वीं सदी में मानव के समक्ष आतंकवाद एक भयानक, वीभत्स तथा क्रूर रूप में सामने आया है। आतंकवाद की यह प्रकृति मानवता, अमन और विश्व-बन्धुत्व के विरूद्ध है। इनका स्पष्ट उद्देश्य हिंसात्मक जैव-अजैव हथियारों एवं परमाणु आयुधों के माध्यम से विश्व जनमत को प्रभावित करना, लोकतंत्र एवं विकास कार्यक्रमों को अवरूद्ध कर 'आतंकवाद का साम्राज्य' कायम करना है। इन वीभत्स परिस्थितियों में संगठित आतंकवाद और अत्याधुनिक हथियारों के समानान्तर शान्ति की पुनः स्थापना विश्व के सामने एक वृहत्त समस्या है। ऐसी सूरत में, मानव जाति को अपनी अस्तित्व रक्षा के लिए दो में से एक बल को चुनना है- नैतिक बल अथवा भौतिक बल। भौतिक बल मानव जाति को आत्म संहार की ओर ले जा रहा है। गांधी जी हमें दूसरी दिशा में जाने का संकेत करते हैं क्योंकि वे नैतिक बल की प्रतिमूर्ति हैं, गांधी जी पूरे संसार में अपनी अहिंसा के लिए प्रसिद्ध हैं। गांधी जी कहते थे कि शुद्ध साध्य के लिए साधन भी शुद्ध होना चाहिए। बैर से बैर कभी शान्त नहीं होता। एक युद्ध के द्वारा दूसरे युद्ध का जन्म होता है। इस प्रकार हिंसा के बदले प्रतिहिंसा का चक्र चल पड़ता है। इस हिंसा को दूर करने के लिए अहिंसा को संगठित करना पड़ेगा। अहिंसक प्रतिकार के लिए जनमत को संगठित करना पड़ेगा। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य महात्मा गांधी की अहिंसा के आलोक में आतंकवाद के स्थायी समाधान हेतु किये जाने वाले प्रयासों का परीक्षण करते हुए यह सिद्ध करने का प्रयास करना है कि हिंसा को हिंसा से नहीं वरन् अहिंसा से ही समाप्त किया जा सकता है।

प्रस्तावना

आतंकवाद समकालीन युग की सर्वाधिक ज्वलन्त अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है जो मूल रूप से आतंक हिंसा, हत्या, अपहरण आदि के द्वारा किसी निहित लक्ष्य की प्राप्ति का साधन है। इसका निशाना अब सिर्फ क्षेत्र या देश विशेष नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व है। अपने उद्देश्य के प्रति बेहद गम्भीर है। इनके इस जज्ब का आधार है- विश्व भर के आतंकवादियों के मध्य गठबंधन और राजनीतिक स्वार्थवाद से प्रेरित कुछ राष्ट्रों द्वारा इनको सामरिक सहयोग और समर्थन, सम्पोषण किया जाना।

आतंकवाद की यह प्रकृति मानवता, अमन और विश्व-बन्धुत्व के विरूद्ध है। इनका स्पष्ट उद्देश्य हिंसात्मक जैव-अजैव हथियारों एवं परमाणु आयुधों के माध्यम से विश्व जनमत को प्रभावित करना, लोकतंत्र एवं विकास कार्यक्रमों को

अवरूद्ध कर 'आतंकवाद का साम्राज्य' कायम करना है। इन वीभत्स परिस्थितियों में संगठित आतंकवाद और अत्याधुनिक हथियारों के समानान्तर शान्ति की पुनः स्थापना विश्व के सामने एक वृहत्त समस्या है। आतंकवाद कमजोर पड़ने के बजाय और मजबूत होकर उभरा है। वह पहले के मुकाबले कहीं ज्यादा संगठित, कहीं ज्यादा प्रशिक्षित और अत्याधुनिक हथियारों से लैस है। आधुनिक संचार उपकरणों ने उसके नेटवर्क को विश्वव्यापी और पहुँच को कई गुना बढ़ा दिया है। उसकी प्रहार और मारक क्षमता में कई गुना वृद्धि हो गयी है। वह सीधे दुनियां की सबसे बड़ी महाशक्ति को चुनौती दे रहा है। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विख्यात अध्येता ब्रियां क्रोजर के अनुसार- ''२१वीं शताब्दि का आतंकवाद अपने स्वरूप में विलक्षण है। यह समाज और राज्य व्यवस्था के लिए एक कलंक जैसा है। यह अपने स्वरूप में वैश्विक है। अर्थात् विश्व भर के आतंकवादियों में भाईचारा है।'' कहने वाले यहाँ तक कह रहे हैं कि जैसे १९वीं सदी की पहचान उपनिवेशवाद और २०वीं सदी की शीतयुद्ध से होती है, वैसे ही २१वीं सदी की पहचान आतंकवाद से होगी।

वर्तमान दशक के आतंकवाद ने अपनी एक समानान्तर अर्थव्यवस्था भी खड़ी कर ली है जिससे उसका भारी भरकम और अत्याधुनिक तंत्र अपने पैरों पर खड़ा हो गया है। खगोलीकरण और उदारीकरण ने हवाला कारोबार का एक विशाल अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क खड़ा कर दिया है। इसके साथ ही निजी बैंकों, वित्तीय संस्थाओं फर्जी कंपनियों का भी एक ऐसा नेटवर्क बना है जो आतंकवादी गिरोहों के लिए बहुत मुफीद बैठ रहा है। मादक पदार्थों और हथियारों की तस्करी का एक अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क बना है जिसे ये आतंकवादी और संगठित अपराधी गिरोह मिलकर चला रहे हैं। इस नये आतंकवाद की एक और पहचान अत्याधुनिक और मारक हल्के हथियारों की सहज उपलब्धता है, जिसे 'क्लाश्निकोव संस्कृति' भी कहते हैं। आतंकवादी गिराहों की पहुँच आधुनिक संचार उपकरणों- वॉयरलेस, वॉकी-टॉकी, सेटेलाइट फोन, सेल्युलर व पेजर और रेडियो संचार तक हो गयी है। एके-४७ राइफलों की पूरी ➲ृंखला हो या राकेट लांचर या स्ट्रिंगर मिसाइलें या फिर ग्रेनेड या प्रलयंकारी आर-डी-एक्स वे इतनी सहजता और सस्ते में उपलब्ध है कि छोटे-छोटे कस्बाई अपराधी गिरोहों तक पहुँच गये हैं, आतंकवादियों की तो बात ही और है। २१वीं सदी के आतंकवाद को एक नया चेहरा जिहाद लड़ने के लिए पूरी दुनियाँ में भाड़े के जिहादियों के निर्यात से मिला है। 'जेहाद' यानी धर्मयुद्ध के नाम पर लोगों को दूसरे धर्मों, संस्कृतियों और मान्यताओं के विरूद्ध भड़काना व हिंसा के लिए तैयार किया जाना।

पिछले दशक में विश्व के कई देशों में घटने वाली आतंकवादी घटनाओं की समीक्षा करें तो यह पता चलता है कि अधिकांश आतंकवादी घटनाओं में युवा वर्ग और विशेषतः विद्यार्थी वर्ग का हाथ रहा है। युवा वर्ग में व्याप्त इस असंतोष और विद्रोह भावना के कारणों की खोज करते समय हम आर्थिक कारणों को इसके लिए जिम्मेदार पाते हैं। आज विश्व के कई देशों में भयंकर महंगाई है, व्यापक पैमाने पर बेरोजगारी है तथा आर्थिक स्थिति अत्यन्त नाजुक है। शिक्षा के स्तर में हो रही गिरावट, विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों में पर्याप्त सुविधाओं की कमी, अध्यापकों की अपर्याप्त संख्या, उच्च कोटि की योग्यता का अभाव और शिक्षा में प्रगतिशीलता का अभाव आदि तत्व उल्लेखनीय है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज और आस पास के सामाजिक परिवेश का उस पर प्रभाव पड़ना लाजमी है। सामाजिक मूल्यों में गिरावट, सामाजिक संस्थाओं का विघटन, वैज्ञानिक प्रगति के कारण पनपता सामाजिक प्रदूषण आदि ऐसे तत्व हैं जो मनुष्य की हिंसक प्रवृत्ति पर विराम लगाने की बजाये उन्हें बढ़ावा देते हैं और प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से ये आतंकवाद के बीज उगा देते हैं।

अपमान की खाद हो, नफरत की मिट्टी और समर्थन रूपी पानी की बूँदे, तो एक छोटे से उद्देश्य की जड़ पर आतंकवाद का छोटा सा पौधा देखते ही देखते एक वट वृक्ष बन जाता है। ऐसे में जो ज्वालामुखी फूटता है, उसे खुद अपने स्वरूप और अन्दर की विनाशकारी शक्तियों का अन्दाजा नहीं होता और वह इतनी तबाही मचाता है कि समाज, उसकी मर्यादायें और कायदे-कानून कुछ भी उसको सीमित नहीं रख सकते।

मानव हिंसा का सहारा तब लेता है, जब उसका शोषण इस कदर हो गया होता है कि उसका रोम-रोम दहकने लगता है। आतंकवाद एक ऐसी प्रतिक्रिया है जो कई एक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनैतिक कारणों के उहापोह की उपज है। व्यापकतर दृष्टिकोण से यदि विचार किया जाये तो

आतंकवाद के मूल कारण असहनीय शोषण, असामान्य भेदभाव, नस्ल की श्रेष्ठता की अवधारणा, केवल मैं सही और सामने वाला गलत की भावना, दर्दनाक गरीबी और अज्ञानता, धर्मांधता की अति और सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजनीतिक अधिकारों का हनन एवं कुछ की व्यक्तिगत उच्चाकांक्षाएं। इतिहास इस बात का गवाह है कि उपनिवेशवादी ताकतों ने अपने अधीन मानवों को किसी भी प्रकार जानवरों से अधिक नहीं समझा है। द० अफ्रीका में अपनाई गयी रंगभेद की नीति, फिलिस्तीनियों को राष्ट्र से बेदखल, १०० के करीब देशों में जबरन सत्ता परिवर्तन की कार्यवाही को अंजाम देने और संसार के अधिकांश तानाशाहों को संरक्षण और शह देने वाले राष्ट्र ने जिन राष्ट्रों के हितों पर कुठाराघात करने के लिए जितनी हिंसा का उपयोग किया होगा, उसके सामने वर्तमान में कहे जाने वाले आतंकवादियों की हिंसा तो कुछ भी नहीं है। कोरिया संघर्ष और वियतनाम, प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध में कितने निर्दोष लोगों को मारा गया, इसका कोई हिसाब नहीं है। वर्तमान में आतंकवाद के नाम से की जाने वाली हिंसात्मक गतिविधियां उन्हीं क्रियाओं की प्रतिक्रियाएं हैं।

इन कारणों के सन्दर्भ में जब हम युद्ध को एक उपाय के रूप में देखते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि युद्ध आतंकवादियों के किसी समूह को तो समाप्त कर सकता, पर इन कारणों को समाप्त नहीं कर सकता। हिंसा का उत्तर प्रतिहिंसा से देने के कारण हिंसा का अन्तहीन दौर प्रारम्भ हो जाता है जो आतंकवाद से भी ज्यादा खतरनाक है। क्या एक बुराई को मिटाने के लिए दूसरी बुराई को जन्म देना उचित है? अतः आतंकवाद को समाप्त करने में युद्ध की निरर्थकता स्पष्ट हो जाती है। परमाणु अस्त्रों के इस दौर में जहाँ विश्व के एक कोने में होने वाला युद्ध ही अनेक आशंकाओं को जन्म दे देता है, कल्पना करो, तब क्या होगा जब समूचा विश्व युद्धरत होगा? शेष क्या बचेगा? सिर्फ गर्म राख! अतः स्पष्ट है कि युद्ध द्वारा आतंकवाद समाप्ति एक ऐसा सौदा है जिसके साथ विनाश अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ है। युद्ध सिर्फ आतंकवादियों को समाप्त कर सकता है, आतंकवादी विचारधारा को नहीं।

प्रत्येक नया आविष्कार और खोज, जब उनका पता लग जाता है तो अत्यन्त ही आसान मालूम देते है। जैसे मैल से मैल को नहीं काटा जा सकता वैसे ही हिंसा से हिंसा का इलाज नहीं हो सकता है। अहिंसा की शक्ति से ही हिंसक प्रवृत्तियों को सद्मार्ग पर लाया जा सकता है। गांधी जी पूरे संसार में अपनी अहिंसा के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ तक कि उनकी तुलना महावीर स्वामी, महात्मा बुद्ध और ईसा मसीह से की जाती है, स्वयं गांधी जी के शब्दों में-

''अहिंसा एक निर्जीव सिद्धान्त नहीं है, अपितु एक जीवित और प्राणदायिनी शक्ति है, यह शूरवीरों का एक गुण है, तथ्यतः उनका सर्वस्व है। यह आत्मा का एक विशिष्ट गुण है। इसलिए यह सबसे उच्चतम धर्म है। अहिंसा के सूर्य के उदय होते ही घृणा, क्रोध और ईर्ष्या-द्वेष आदि अन्धकार रूपी शत्रु भाग जाते हैं।''

गांधी 'अहिंसा परमोधर्मः' यह मानते थे। उनका कहना है- ''यह अहिंसा किसी को न मारना तो है ही। कुविचार मात्र हिंसा है। उतावली हिंसा है। मिथ्या भाषण हिंसा है। द्वेष हिंसा है। किसी का बुरा चाहना हिंसा है। जगत के लिए जो आवश्यक वस्तु है, उस पर कब्जा करना भी हिंसा है।'' अहिंसा अर्थात् सर्वव्यापी प्रेम। **''अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः''** पातंजल योग सूत्र का यह सूत्र अहिंसा का ऐश्वर्य प्रतिपादित करता है। इसका तात्पर्य है कि अहिंसा का भाव जब मन में दृढ़तापूर्वक स्थित हो जाता है तो उसके निकट आकर हिंसक मनुष्यों, पशुओं और कुटिल स्वभाव वालों का वैरभाव शान्त हो जाता है। गांधी जी कहते थे कि अपने विरोधियों के प्रति भी अहिंसा का भाव रखना चाहिए। विरोधी को परास्त करना है तो उस पर प्रहार करके नहीं अपितु उसका हृदय परिवर्तन करके परास्त करना चाहिए। अपने भावनात्मक रूप में अहिंसा का अर्थ होता है- प्रेम और उदारता की पराकाष्ठा। यदि मैं अहिंसा का पुजारी हूँ, तो मुझे अपने शत्रु को प्यार करना चाहिए, उसके साथ वही व्यवहार करना चाहिए जो मैं बुराई करने वाले पिता या पुत्र के साथ करूँगा। प्रेम के साथ बलिदान भावना अनिवार्य रूप से जुड़ जाती है।

अब महत्व इस बात का है कि आतंकवाद की इस स्थिति को सुधारने में क्या पहल हो रही है? आतंकवाद के विरूद्ध हर देश का कानून है, अर्थात् इसके समापन के लिए हर देश ने अभियान चलाया है, इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय संगठन की योजना बनायी गयी है। आतंकवाद को समाप्त करने के लिए

हिंसा का सहारा लिया जाता है, पर हिंसा को हिंसा से समाप्त नहीं किया जा सकता। भारत वर्ष की आजादी इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। ऐसे में आतंकवाद को समाप्त करने में अहिंसा की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। इसका प्रभाव हृदय पर होता है। यदि अहिंसात्मक आन्दोलन के द्वारा आतंकवादियों के हृदय को वश में कर लिया जाये तो आतंकवाद का समापन जड़ से हो जायेगा। आज आतंकवाद में संलग्न लोगों के हृदय-परिवर्तन की आवश्यकता है। उनमें ऐसे भाव भरने की आवश्यकता है, जो दानव को मानव बना सके। यह काम अहिंसा द्वारा ही सम्भव है। 'रामायण' के रचयिता महर्षि वाल्मीकि के डाकू से महर्षि बनने की कथा तथा भारत के महान सम्राट अशोक के हृदय परिवर्तन की कथा अहिंसा की शक्ति द्वारा दानव को मानव बनाने का ही प्रत्यक्ष उदाहरण है। रावण जैसे अत्याचारी, अहंकारी और आततायी राक्षस का भी मृत्यु के समय हृदय परिवर्तित हो गया और उसने अपना समस्त ज्ञान लक्ष्मण को प्रदान किया।

अतः जब अहिंसा द्वारा महर्षि वाल्मीकि, सम्राट अशोक और रावण जैसे आततायी का हृदय परिवर्तित किया जा सकता है, तो फिर आतंकवादियों का क्यों नहीं? मेरा मत यह है कि आतंकवाद की समाप्ति के लिए समस्त मानव समुदाय को एक कुशल व योग्य चिकित्सक की तरह व्यवहार करना चाहिए। एक चिकित्सक किसी भी बीमारी का इलाज करने से पूर्व बीमारी के कारणों की पूरी जाँच करता है। फिर उन कारणों को समाप्त करने वाली औषधि का प्रयोग कर बीमारी को समूल नष्ट कर देता है तथा शरीर को लेशमात्र भी क्षति नहीं होने देता है। ठीक इसी सिद्धान्त का अनुसरण कर मानव समुदाय आतंकवाद रूपी जहरीले नाग को समूल नष्ट कर सकता है। यदि विश्व को विश्वंसक युद्ध एवं आतंकवाद से बचाना है तो विश्व के सभी देशों को स्वार्थ की राजनीति से ऊपर उठकर गांधी के सत्य व अहिंसा के संदेश को सही मायने में अपनाना हो। पंचशील का सिद्धान्त अहिंसा का ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विकास है। इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण बनाना होगा। निःशस्त्रीकरण को अपनाना होगा। इसके लिए संयुक्त राष्ट्र संघ सबसे उपयुक्त मंच है। युद्ध सेनाओं के स्थान पर शान्ति सेनाओं की स्थापना करनी होगी जो विकास कार्यों को अंजाम दें। फिलीस्तीन में एक ऐसे अहिंसक आन्दोलन के बारे में सोचा जा सकता है जो फिलीस्तीनियों की बुनियादी मांगों पर एक मत बनाये और शान्तिपूर्ण तौर-तरीकों से मांगों की स्वीकृति के लिए सत्याग्रह चलाएं। इराक में सभी समुदायों के लोग शान्तिपूर्ण तरीके से विदेशी सेना की वापसी के लिए आन्दोलन आरम्भ कर सकते हैं।

स्पष्ट है कि महात्मा गांधी ने जिस अहिंसा, शान्ति और संयम का सन्देश दिया वह गम्भीर चिन्तन और क्रियान्वयन की अद्वितीय सामग्री है, जिसे ठुकराने में मानव जाति का कल्याण नहीं है। महात्मा गांधी की अहिंसात्मक प्रतिरोध की तकनीकि पश्चिम में भी विशेष दिलचस्पी का विषय बन गयी है। बीसवीं शताब्दि में डॉ० मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने अमरीका में अश्वेतों के लिए नागरिक अधिकार आन्दोलन गांधीवादी विचारधारा के आधार पर चलाया। दक्षिण अफ्रीका के अश्वेत नेता ओलिबर ओबो का कथन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गांधीवादी अहिंसा की प्रासंगिकता को इन शब्दों में व्यक्त करता है, ''महात्मा गांधी के अतिरिक्त किसी अन्य का नाम नहीं सोच सकता जो हमें भयंकर युद्ध के मध्य साहस व मानवता प्रदान कर सके।''

अक्रोध से क्रोध, अहिंसा से हिंसा और सत्य से असत्य की कहानी को ही गांधी कहते हैं। गांधी विराम नहीं गति हैं, विवशता नहीं आकुलता हैं, भाव नहीं भावना हैं, मौन नहीं गुंजन हैं, शून्य नहीं विराट हैं। वहाँ सबके लिए कार्यक्रम है- यदि हम सचमुच उस वाणी को सुनने के लिए तैयार है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. गांधी जी की पुस्तक- 'गांधी चिन्तन' अनुवादक यशपाल जैन- १९७०, गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन है।
२. आचार्य जे.बी. कृपलानी की पुस्तक- 'गांधी मार्ग' प्रकाशक साधना-सदन, इलाहाबाद, दिसम्बर-1947
३. दादा धर्माधिकारी की पुस्तक- 'अहिंसक क्रान्ति की प्रतिक्रिया' वाराणसी सर्व सेवा संघ प्रकाशन (1984)

४. गिरिराज शाह की पुस्तक- Encyclopedia of Internation Terrorism, UNMOL Publication Pvt. Ltd., New Delhi की चार वाल्यूम
५. मानचन्द खण्डेला की पुस्तक- 'अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद' आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर (राजस्थान), २००२

LBP PUBLICATION